'Samrat Ashoka'

Ashoka the Great (304 B.C.E. - 232 B.C.E), also known as **Asoka**, was the third ruler of the Maurya Empire who ruled from 273 B.C.E. to 232 B.C.E. He was the grandson of Chandra Gupta Maurya and son of Bindusara. After a number of military conquests, Ashoka reigned over most of South Asia and beyond, from present day Afghanistan in the north to Bengal in the east, and as far south as Mysore. An early supporter of Buddhism, Ashoka established monuments marking several significant sites in the life of Shakyamuni Buddha, and according to Buddhist tradition was closely involved in the preservation and transmission of Buddhism.

King Ashoka has come to be regarded as one of the most exemplary rulers in world history. The British historian H.G. Wells has written: "Amidst the tens of thousands of names of monarchs that crowd the columns of history ... the name of Asoka shines, and shines almost alone, a star." Although there were references in Buddhist literature to Ashoka , definitive historical records of his reign were lacking till the nineteenth century when there came to light a large number of edicts, in India, Nepal, Pakistan and Afghanistan. These edicts, inscribed on rocks and pillars, proclaim Ashoka's reforms and policies and promulgate his advice to his subjects. Ashoka was the first ruler who inscribed his messages to his subjects and officials on stone surfaces-natural rocks as well as polished pillars. He used the inscriptions to proclaim what he understood to be dhamma.

In the beginning, Ashoka is believed to have used military strength to expand his empire. During the expansion of the Mauryan Empire, Ashoka led a war against a state named Kalinga (present day Orissa) with the goal of annexing its territory, something that his grandfather had already attempted to do. The conflict took place around 261 BCE and it is considered one of the most brutal and bloodiest wars in history. Even though the people from Kalinga defended themselves courageously, Ashoka's military strength was far beyond Kalinga's.

On witnessing the extent of destruction in Kalinga after the war, Ashoka issued an edict expressing his regret for the suffering inflicted in Kalinga. He assured that he would renounce war and embrace the propagation of dhamma.

For Ashoka, dhamma was an ancient tradition which was essentially a code of ethical behavior and the benefits thereof, which appeared to be his attempt to universalize a code focused on social ethics and on the accommodation of diverse views. His formulations of dhamma were intended to influence the conduct of its people in relation to each other, and included practice of respect for elders, treating slaves and servants kindly and respect for religions and traditions other than one's own. The empire included a spectrum of societies where different categories were variously organized. The emphasis on harmonious social relations between the different people was repeated on many occasions. Besides, general values such as not injuring humans and animals, being forgiving, treating all creatures with compassion, observing piety and adhering to the truth were also emphasized.

Ashoka was a statesman in the context of inheriting and sustaining an empire in a particular historical period, as well as a person with a strong commitment to changing society through the propagation of social ethics. He advocated tolerance, and non-violence as official policy and this makes him an unusual ruler. He built roads, dug wells and built rest houses. Besides, he also arranged for medical treatment for both human beings and animals.

Ashoka sought the advancement of the essentials of all sects and believed that this was only possible if each treated the other with respect. He believed that in honoring the views of others one is honoring one's own sect. He instituted a body of dhamma-mahamattas concerned with the general welfare of his subjects. The dhamma-mahamattas went from place to place spreading the message of dhamma. Ashoka also sent messengers to spread these ideas to other lands.

Ashoka's edicts are to be found scattered in more than thirty places throughout India, Nepal, Pakistan and Afghanistan. Most of these edicts are written in Brahmi script. Ashoka's edicts, which comprise the earliest decipherable corpus of written documents from India, have survived throughout the centuries because they are written on rocks and stone pillars with animal capitals. These pillars in particular are testimony to the technological and artistic genius of ancient Indian civilization. Averaging between forty and fifty feet in height, and weighing up to fifty tons each, the few capitals that survive are widely recognized as masterpieces of Indian art. Both the pillars and the capitals exhibit a remarkable mirror-like polish that has survived despite centuries of exposure to the elements. Some, like the Lumbini pillar, mark the Buddha's birthplace, while its inscriptions commemorate Ashoka's pilgrimage to that place. Others are to be found in or near important population centres so that their edicts could be read by as many people as possible.

The Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Samrat Ashoka.

Credits:-

Text	:	Based on the material available on internet.
Stamp	:	Kamleshwar Singh
FDC/Cancellation	:	Alka Sharma

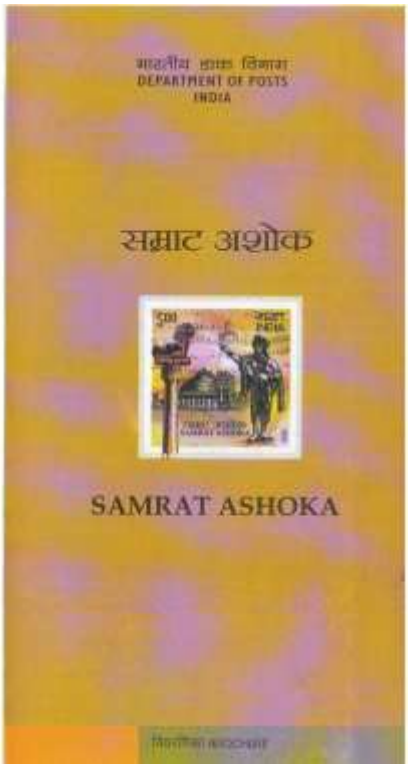

सम्राट अशोक

अशोक महान अर्थात् सम्राट अशोक (304 ई.पू. से 232 ई.पू.), मौर्य साम्राज्य के तृतीय शासक थे, जिन्होंने 273 ई.पू. से 232 ई.पू. तक राज किया। वे चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र और बिन्दुसार के पुत्र थे। अनेक सैन्य विजय अभियानों के उपरान्त अशोक ने प्राय: सम्पूर्ण भारतवर्ष के पूर्व में बंगाल तक और दूरतर दक्षिण में मैसूर तक प्रशिक्षण प्रक्रियाओं को अभिवर्धित सुधार एवं संचालन किया। अशोक, बौद्ध धर्म के प्रारंभिक समर्थकों में से थे और उन्होंने शाक्यमुनि बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण स्थलों पर बौद्ध स्मारकों के अनुरक्षण स्मारक स्थलों का निर्माण कराया। सम्राट अशोक, बौद्ध धर्म के संरक्षण और प्रचार-प्रसार से काफी से जुड़े रहे।

सम्राट अशोक को विश्व इतिहास के सर्वश्रेष्ठ आदर्श शासक के रूप में स्वीकार किया गया है। ब्रिटिश इतिहासविद एच.जी. वेल्स ने लिखा है कि 'इतिहास के पन्नों में दर्ज हजारों शासकों के नामों में अशोक का नाम एकमात्र तारे की तरह चमकता है।' हालांकि बौद्ध साहित्य में अशोक का उल्लेख अवश्य था, परन्तु उनके शासन के ठोस ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त नहीं हो पाए थे। 19 वीं शताब्दी में खोदे जाए, जब खोज के दौरान भारत, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में अनेक स्थानों पर बड़ी संख्या में शासनादेश प्राप्त हुई। ये शासनादेश, पत्थरों और खंभों पर उत्कीर्ण हैं और इनमें अशोक द्वारा किए गए सुधारों और अपनाई गई नीतियों के साथ-साथ प्रजा को दिए गए संदेश के उद्धरणों का वर्णन है। अशोक ऐसे पहले शासक थे जिन्होंने अपनी प्रजा और अपने कर्मचारियों के लिए उन्हें सीधे संदेशों को प्राकृतिक रूप में पढ़ें जाने वाली शिलाओं के साथ-साथ पत्थरदार खंभों पर उत्कीर्ण किया। सम्राट अशोक ने इन शासनादेशों के माध्यम से 'धम्म' अर्थात् धर्म की अपनी संहिता को उद्घोषणा की।

माना जाता है कि शुरुआत में अशोक ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए किया। मौर्य साम्राज्य के विस्तार अभियान के दौरान, अशोक ने कलिंग (वर्तमान में उड़ीसा) नामक रियासत पर कब्जा करने के उद्देश्य से एक युद्ध आरम्भ कर दिया। उनके पितामह भी यह प्रयास कर चुके थे। अशोक के नेतृत्व में कलिंग का यह युद्ध 261 ई.पू. में लड़ा गया और इसे इतिहास के सबसे क्रूरतम और रक्तरंजितपूर्ण युद्धों में गिना जाता है। अभिलेखविदों ने पूरे संसार में अपनी जान बचाने का प्रयास किया परन्तु अशोक की सैन्य शक्ति उनके शासनों से कहीं अधिक थी।

युद्ध के बाद कलिंग की विनाशलीला को देखकर अशोक अत्यंत व्यथित हुए और उन्होंने एक शासक बनने का संकल्प में दूर्व तबाही के लिए खेद व्यक्त किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे युद्ध का त्याग कर धम्म (धर्म) के प्रचार-प्रसार का मार्ग अपनाएंगे।

अशोक के लिए धम्म एक प्राचीन परंपरा का नाम था, जो वस्तुत: नैतिक आचरण की एक संहिता और उससे प्राप्त होने वाले लाभों का सार है। धम्म के प्रति अशोक का यह दृष्टिकोण, सामाजिक नैतिकता पर केंद्रित तथा विविध विचारों को समाहित करने वाली एक सार्वभौमिक संहिता के विकास की दिशा में उनका प्रयोग प्रतीत होता है। उनके धम्म सूत्रों का उद्देश्य, उनके प्रजाजनों के एक-दूसरे के प्रति व्यवहार को प्रभावित करना था। इसमें शामिल थे बुद्धों के प्रति सम्मान, दासों और सेवकों के प्रति व्यवहार और दूसरों के धर्म व परंपराओं का सम्मान करना सम्मिलित था। अशोक के साम्राज्य में विभिन्न समुदाय सम्मिलित थे, जिनमें श्रेणियों के लोग अलग-अलग रूप से संगठित थे। इन विभिन्न लोगों के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्धित संबंध बनाए रखने के संदेश को विभिन्न अवसरों पर बल देकर दोहराया जाता था। इसके अतिरिक्त, अन्य नैतिक मूल्यों जैसे मनुष्यों के साथ-साथ पशुओं को चोट न पहुंचाना, क्षमाशीलता, सभी जीवों के प्रति दया भाव, करुणामय व्यवहार रखना और सत्य के मार्ग को अपनाने पर भी विशेष बल दिया जाता था।

सम्राट अशोक इस अर्थ में महान राजनीतिज्ञ थे कि वे एक ऐतिहासिक कालखण्ड विशेष में एक साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने और उसे बनाए रखा, परन्तु साथ ही वे सामाजिक नैतिकता के प्रचार-प्रसार के माध्यम से समाज को परिवर्तित करने के प्रति भी पूर्णत: प्रतिबद्ध थे। उन्होंने सहिष्णुता का संदेश दिया तथा अहिंसा को प्रशासन की नीति बनाए जाने से अशोक को असाधारण शासक की श्रेणी में ला दिया। उन्होंने सड़कों का निर्माण करवाया, कुएं खुदवाए और विश्राम स्थल बनवाए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मानवों के साथ-साथ पशुओं की चिकित्सीय देखभाल की भी व्यवस्था की।

अशोक ने सभी वर्गों की उन्नतिकांक्षा किया और उनका विश्वास था कि सभी वर्गों-संप्रदायों का प्रचार-प्रसार तभी संभव है जब सभी एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना रखें। उनका मानना था कि दूसरों के विचारों का सम्मान करना से हमारे अपने सम्मान का ही सम्मान है। अपने प्रजाजनों के सर्वांगीण कल्याण के लिए उन्होंने धम्म-महामात्रों का एक संगठन बनाया। ये धम्म-महामात्र राज्य-प्रांत स्थानों की यात्रा कर धम्म के संदेश का प्रचार-प्रसार करते थे। अशोक ने इन शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए अपने दूतों को अन्य देशों में भी भेजा।

सम्राट अशोक की साम्राज्य भारत, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में लगभग 30 जगहों पर पाई गई हैं। इनमें से अधिकांश शासनादेश ब्राह्मी लिपि में लिखी गई हैं। अशोक की शासनादेश भारत के सर्वाधिक पहलीय लिखित दस्तावेजों में गिनी जाती हैं। पत्थरों और पशु-आकृति के शीर्षों वाले खंभों पर अंकित होने के कारण ये शासनादेश स्थापत्यकला के क्षेत्र की धरोहर हैं। ये स्तंभ प्राचीन भारतीय सभ्यता के तकनीकी एवं कलात्मक ज्ञान की उपलब्धता के प्रमाण हैं। इन खंभों की औसत ऊंचाई 40 से 50 फुट है और इनका वजन 50 टन है। इनमें से कुछ खंभों को पवित्र धर्म से महानीय काल की महत्वपूर्ण घटनाओं के रूप में स्थापित किया जाता है। इन खंभों और शीर्षों की सतह शीशे जैसी है और सदियों तक मौसम की मार झेलने के बावजूद यह चमक आज भी बरकरार है। इनमें लगभग में से चुनिंदे खंभ, जैसाकि बुद्ध के जन्म स्थान का संकेत है और इस पर उत्कीर्ण शिलालेख, अशोक की इस स्थान की तीर्थयात्रा से संबंधित हैं। इस प्रकार के अन्य खंभ, अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में अथवा आस-पास स्थापित पाए गए हैं। इनका उद्देश्य यह था कि अधिक से अधिक संख्या में लोग इन शासनादेशों को पढ़ सकें।

डाक विभाग, सम्राट अशोक पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

सूचना	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट	:	कमलेश्वर सिंह
प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका	:	अल्का शर्मा

तकनीकी आंकड़ें
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	:	5 लाख 0.5 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00